



लोक गीतों में साहित्य

अमृता प्रियंवदा

सहायक प्राध्यापक, संगीत विभाग

सुन्दरवती महिला महाविद्यालय

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय

संस्कृति हमारी पहचान होती है। यह किसी भी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है। किसी समाज की संस्कृति से तात्पर्य उस समाज के व्यक्तियों के रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार, रीति-रिवाज़, संगीत, नृत्य, भाषा-साहित्य, धर्म-दर्शन, विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप से होता है जिसमें उसकी आस्था होती है और जो उसकी पहचान बन जाता है। लोक मानस की किसी भी अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए स्वर, ताल, नृत्य के आश्रय से ही लोक संगीत का जन्म होता है। लोक संगीत की महिमा बताते हुए कहा गया है कि मनुष्य नौ प्रकार के रसों से प्रभावित होकर जब स्वाभाविक रूप से गाकर, बजाकर अथवा नाचकर अपने भावों को प्रकट करता है, तो उसे लोक संगीत कहते हैं।

फोक का अर्थ सभ्यता से दूर रहने वाली जाति से लिया जाता है। किंतु हिंदी के लोक शब्द का प्रयोग साधारण लोगों के लिए किया जाता है जो सभ्यता से दूर हो। इसलिए लोकगीत उस रचना को कहा जा सकता है जो ग्रामीण जनो के सामान्य भावों को गेय रूप में अभिव्यक्त करें। संगीत और लय लोकगीतों का प्राण होते हैं। **सूर्यकरन पारिक के अनुसार, “आदिम मनुष्य के गानों का नाम लोकगीत है। प्राचीन जीवन की, उसके उल्लास की, उसकी उमंगों की उसकी करुणा की, उसके समस्त दुख सुख की कहानी इन में चित्रित है।”**

लोकसंगीत की परंपरा अत्यंत समृद्ध है। यह सम्पूर्ण विश्व की संस्कृतियों में पाई जाती है। हर देश, प्रान्त, कौम, समाज की अपनी एक अलग परंपरा होती है, अपनी भाषा होती है, रीति-रिवाज़ होते हैं, जो उसकी पहचान होती है। लोकगीत इन्हीं परम्पराओं को संरक्षित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। लोकगीतों का प्रवाह मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ियों को संस्कार सिखाते आ रहा है। जनमानस जो पहले ज़माने में निरक्षर होते थे पर अनुभवों के धनी होते थे। यही कारण है कि लोक गायक के गीत हमें लोक भाषा में ही मिलते हैं। हमारा देश बहुत विशाल है और उतनी ही विशाल है यहाँ की लोक परंपरा। हमारे बुजुर्गों ने इन लोक परम्पराओं को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए गीत-संगीत को माध्यम बनाया।

हर क्षेत्र के लोक गीत में वहाँ की तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव परिलक्षित होता है। इन गीतों को लोक गायक अपनी भाषा में गाते हैं। इससे जनमानस उन्हें सरलता से समझ लेता है और आत्मसार कर लेता है। इसी कारण लोक गीतों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सँभालने का, अगली पीढ़ी में संस्कार परोने का, अपने पूर्वजों की वीर गाथाओं को सहेजने का एक सशक्त माध्यम माना गया है। हिंदी, भोजपुरी, मगही, मराठी, राजथानी, गुजराती इत्यादि सभी भाषाओं के अपने लोक गीत हैं जो उस प्रदेश की लोक संस्कृति को उजागर करते हैं।

इन लोक गीतों की आत्मा है इनकी भाषा, इनका साहित्य। लोक साहित्य एक पारिभाषिक शब्द है जो लोक और साहित्य से मिलकर बना है। यह जीवन की अभिव्यक्ति है, जो जीवन से बड़ी निकटता से जुड़ा हुआ है। आभिजात्य संस्कार पांडित्य की चेतना से परे यह साधारण मानव के भावों को अभिव्यक्त करता है। यह लोक मानस की प्रवृत्ति में समाया हुआ है और इसका रचनाकाल बताया नहीं जा सकता। समाज में जब से अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा बनी तभी से लोक साहित्य का सृजन समझा जाना श्रेष्ठ होगा।

लोक हमारे जीवन का महाकुम्भ है, जिसमें समस्त जनमानस का आविर्भाव होता है। यह भूत,वर्तमान और सुदूर भविष्य की निरंतरता से भरा हुआ है। लोक साहित्य को लोक संस्कृति का दर्पण कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। इसके माध्यम से जन तर्क की कसौटी से दूर अपनी मान्यताओं, अपने विश्वास और अपनी परम्पराओं को सहज भाव से स्वीकार करते हुए अपने भावों और विचारों को गीतों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। कोई अनुभूति जब सहज और स्वाभाविक होती है तो वह जनमानस द्वारा अपना ली जाती है और फिर उनकी ही हो जाती है। लोक चिंतन और जीवन में शनैःशनैः परिवर्तन भी होता आया है।

मानव की हर्ष-विषाद जैसी मूल भावनाएं जब सहज अनुभूति कर मन की अटल गहराइयों में अवस्थित भावों को व्यक्त करना चाहती हैं तब लोक में प्रचलित शब्दों का जामा पहन कर लोगों के मनो को टटोलती हुई उन्हें इतना मोहित कर लेती हैं कि एक कंठ से दूसरे कंठ के अपने अधिवास में शताब्दियों तक थोड़े परिवर्तन के साथ अपने आकर्षण को बनाये रखने में सक्षम रही हैं। लोक साहित्य में लोक गीत मानव हृदय की अनुभूतियों को व्यक्त करता है और दूसरों के हृदय पर अपना प्रभाव भी छोड़ता है। इनके माध्यम से हम विभिन्न देशों के रीति-रिवाज़, रहन-सहन तीज-त्योहार, संस्कृति-सभ्यता से परिचित होते हैं। इसीलिये कहा गया है कि लोक गीत हमारी संस्कृति का आइना है। लोक साहित्य का क्षेत्र आदिम जातियों और ग्राम सभ्यताओं तक सीमित नहीं अपितु इसका विस्तार इने परे नगरों तक है।

मानव मन एक सा होता है। देश-काल चाहे जो भी हो मानव मन उसके सुख-दुःख के भाव, विभिन्न परिस्थितियों पर उनके व्यवहार अमूमन एक से ही होते हैं। उनकी आशा-निराशा, कुंठा-विवशता सभी समान ही होते हैं। धरा की धड़कन, अम्बर का विस्तार, बागों की खुशबू के साथ साथ जीवन के हर मोड़ पर आने वाली खुशियाँ या गम जीवन का हर श्वास देश भर के लोक गीतों में समाहित है। उदाहरण के तौर पर भोजपुरी लोक साहित्य भोजपुरी क्षेत्र में फैली समस्त जनता के साहित्य से है। इनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार लिखित साहित्य नहीं अपितु अनुभव जन्य वास्तविक साहित्य है।

लोक साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसे लोक द्वारा रचा गया हो। यह जनमानस की भावनाओं, उनकी अनुभूतियों, विचारों की सहज अभिव्यक्ति है। लोक साहित्य का उद्भव मानव समाज के उद्भव के साथ ही हुआ है। वैसे तो ऐसी मान्यता है कि लोक साहित्य की रचना किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं वरन् सम्पूर्ण लोक के सहयोग से उत्पन्न रचना है पर हमारे यहाँ भिखारी ठाकुर, जिन्हें “भोजपुरी लोक गीतों का शेक्सपीयर” की उपाधि से नवाज़ा गया है, महेंद्र मिश्र, मास्टर अज़ीज़ जैसे लोक गीतों के रचनाकारों ने अपनी कृतियों से लोक का मार्गदर्शन किया है, पीढ़ी दर पीढ़ी रीति-रिवाज़, संस्कार आगे बढ़ाया है और लोक का समाज का मार्गदर्शन किया है। इन रचनाकारों ने समाज के मर्म को समझा, लोगों की भावनाओं को समझा, संस्कारों की अनुभूति की और फिर अपनी रचनाओं में इन सभी भावों का इतना सुन्दर प्रयोग किया कि इनके गीत समाज का आइना बन गए, जीवन जीने का सलीका बन गए। ये हमारी संस्कृति के धरोहर बन हमारी चेतना को जागृत करने का कार्य बखूबी करते रहे।

‘लोक साहित्य किसी भी समाज वर्ग या समूह के सामूहिक जीवन का दर्पण होता है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष का चिंतन मानव विवेचन विश्लेषण नहीं होता बल्कि सामूहिक चेतना अनुभवों, संवेदनाओं की अभिव्यक्ति रहती है। किसी भी समाज के इतिहास और संस्कृति को भली-भांति समझने के लिए लोक साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। लोक साहित्य में किसी जाति या समाज के अतीत गौरव उत्थान पतन को ही समझने में सहायता नहीं मिलती बल्कि वर्तमान में जो उसकी दशा है उसको सुधारने में भी सहायता मिलती है। लोक साहित्य जनता के कंठों में देश के सभी राज्यों, भाषाओं और छोटी-छोटी बोलियों के रूप में भरा हुआ है। भारतीय लोक साहित्य जनता के व्यापक जनसमूह की सभी मौलिक सर्जनाओं का परिणाम है। यह केवल लोक काव्य या गीतों तक ही न सीमित न होकर जनता के जीवन धर्म, संस्कृति तथा परम्पराओं से भी जुड़ा हुआ है। लोक साहित्य में काव्य कला संस्कृति और दर्शन सभी कुछ एक साथ है।’ (शर्मा सुनीता)

<https://sunitasharmahpu.wordpress.com>

विभिन्न आंचलिक भाषाओं, बोलियों की लोरियों और संस्कार गीतों में उसके मूल भाव और उसकी आत्मा को हूबहू प्रस्तुति झलकती है। यों भी कह सकते हैं कि ये लोरियाँ जहाँ असंख्य माताओं की भावाभिव्यक्तियाँ हैं, वहीं संस्कार गीत मनुष्य की वे परछाइयाँ हैं, जो मनुष्य की उत्पत्ति के समय से ही किसी-न-किसी रूप में संग चली आ रही हैं। हमें पहला संस्कार माँ की लोरियों से मिलता है। माँ के वात्सल्य भरे हृदय में स्वतः उपजी लोरियाँ न केवल पारिवारिक सदस्यों व नातेदारों से परिचय कराती हैं, बल्कि वनस्पतियों, नदियों, पहाड़ों, जीव-जंतुओं एवं संपूर्ण ब्रह्मांड से अपने रिश्ते को भी दर्शाती हैं।

लोकगीतों में संस्कार गीत का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कारों के अवसर पर समयानुकूल जो गीत गाए जाते हैं वह संस्कार गीत कहलाते हैं। धर्म ग्रंथों में संस्कारों की संख्या 40 बताई गयी है किंतु प्रचलित मान्यतानुसार 16 संस्कार अभी को मान्य है। सभी

भारतीय भाषाओं के लोकगीतों में संस्कार गीत अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। संस्कार का मूलतः दैहिक और आत्मिक शुद्धि माना गया है। प्राचीन साहित्य में संस्कार शब्द शिक्षा, प्रशिक्षण, सौजन्य, पूर्णता, शुद्धि, संस्करण, परिष्करण आदि विविध रूपों में उपर्युक्त हुआ है। संस्कारों का सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक महत्व स्वीकार किया गया है। संस्कार गीतों को विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार परिभाषित किया है जो इस प्रकार है-

दीनानाथ साहनी के अनुसार, "संस्कार गीत मनुष्य की वह परछाया है जो मनुष्य की उत्पत्ति के समय से ही किसी ना किसी रूप में संग चली आ रही है।"

विद्यानिवास मिश्र के अनुसार, "संस्कार गीतों में संस्कृति की पवित्रतम धरोहर सुरक्षित है। इसमें मनुष्य की दृष्टि कितनी विशद और व्यापक है कि राम-सीता, शिव-पार्वती, कृष्ण और राधा सभी का ऐश्वर्य पिघल कर मानवीय बन गया है।"

हिन्दू धर्म के संस्कार गीतों के प्रमुख प्रचलित प्रकार निम्न कहे जा सकते हैं-

- जन्म संस्कार
- नामकरण संस्कार
- अन्नप्राशन संस्कार
- मुंडन संस्कार
- यज्ञोपवीत संस्कार
- विवाह संस्कार
- कर्ण भेद संस्कार
- मृत्यु संस्कार

जन्म संस्कार गीत

हिंदू धर्म में संतानोत्पत्ति सृष्टि संरचना में सहायक होने के कारण बहुत पवित्रता से देखा जाता है। जन्म से पूर्व माँ की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का चित्रण करता हुआ कई गीत मिल जायेंगे जो घर के बाकी सदस्यों को सृजन की गंभीरता को समझाता है। ऐसी अवस्था में होने अली माँ का की ध्यान रखा जाना चाहिए इसकी सीख भी देता है। इससे गीत लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध है। गर्भवती स्त्री की मनचाहा खाने की इच्छा को व्यक्त करते गीत का एक उदाहरण देखिए-

- राजै तीजौ महीना जब लागिऐ,
बकौ खीर खांड मन आइऐ।

शिशु जन्म के बाद तो शिशु में कृष्ण राम की छवि देखती महिलाओं के अनगिनत गीत मिल जायेंगे जो ममता और वात्सल्य से ओत प्रोत होते हैं। पुत्र जन्म पर अधिकांश समाज में गाए गए लोकगीतों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

- जशोदा जी के अंगना भरी भीड़ लागल
अइले कन्हैया त भाग्य आज जागल।
- मचिया बैठल रानी कौशल्या बालक मुख निरेखेली हो
हे ललना मोर प्राण के आधार नयनवा बीच राखब हो।

प्रायः जन्म के 6 या 8 महीने की अवस्था में बच्चे का अन्नप्राशन संस्कार किया जाता है। इस संस्कार में शिशु को पहली बार अन्न खिलाया जाता है। गीतों में संदेश भी होता है कि जैसा अन्न खाओगे वैसा ही मन पाओगे।

संस्कार शुभ अन्नप्राशन का यह, संदेश सुनाता है।
जैसा खाते अन्न हमारा, मन वैसा बन जाता है॥
प्रथम बार जब अभिमंत्रित कर, शिशु को खीर चटाते हैं।
खिल उठता मानस शिशु का, शुभ संस्कार मिल जाते हैं॥
तुलसी दल के मिश्रण से तन- मन सुन्दर बन जाता है॥

हमारे लोक गीत नीति रीति और संस्कारों से भरे हुए होते हैं। इनके विलुप्त होने से हमारे संस्कारों में भी कमी स्पष्ट देखने को मिलती है। हमारे यहाँ का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार यज्ञोपवीत या जनेऊ संस्कार का है। निम्न पंक्तियों में जो जनेऊ संस्कार का वर्णन है वो आज के विकसित समाज में मिलना दुर्लभ प्रतीत होता है।

**“मांगेले बरुआ जे धोती से पोथी,औउरो मांगे ले पीयर जनेऊ हे।
मांगेले बरुआ हो चढ़न हो घोड़वा ,औउरो एक मांगे करना कुआंर हे।
देब में बरुआ जे धोती से पोथी,देब में पीयर जनेऊ हे।
देब में बरुआ हो चढ़न हो घोड़वा,आउरो कहाँ पाईबो कानकुआंर हे।”**

इसी प्रकार विवाह गीतों के माध्यम से भावनाओं का मर्म, बेटी को संस्कारों की नसीहत, बेटे को जिम्मेदारियों का एहसास करवाने वाले गीत, बारातियों को गाली सुनाने वाले गीत इस बात का प्रतीक हैं कि अब इस रिश्ते के बाद हम दोनों-लड़का पक्ष और लड़की पक्ष सामान हैं। हमारी इज्जत और आपकी इज्जत में कोई अंतर नहीं है। लोक गीत समाज में प्रतिष्ठा और नियमों को बरकरार रखने का एक बहुत सजग और सचेत माध्यम रहे हैं। इन गीतों में लिप्त साहित्य में इतनी क्षमता है कि इन्होंने समाज को सक्रीय और जीवंत बनाये रखने में कोई कसर नहीं छोड़ा। विवाह के समय

समुझावन गीत की परंपरा हुआ करती थी जिसमें गाँव-समाज की महिलायें लड़की को गीतों के माध्यम से समझती थीं और विवाह के बाद की नई जिन्दगी के लिए तैयार करती थीं। लोक गीतकार मास्टर अजीज़ की एक रचना इसी को उजागर करती है-

**“ बोली मीठी बोलीय ए बेटी, जैसे मीठी मिसिरिया
गौवें – गौवें चालिह ए बेटी, घर आँगन दुअरिया।”**

संस्कार गीतों के अतिरिक्त भी लोक गीतों का साम्राज्य बहुत बड़ा रहा है। हर मौसम के गीत, तीज-त्योरी के गीत, खेतों में काम करते समय अपनी थकान से मन हटाने के लिए गाये जाने वाले रोपनी और कटनी के गीत। दूर देश गए पति के विछोह में पत्नी की मनः स्थिति को उजागर करते गीतों की लम्बी फेहरिस्त है।

होली के अवर पर गया जाने वाला फाग, चैता, सावन की कजरी जिसमें संबंधों को जीवंत बनाए रखने के लिए भाभी- ननद के बीच की छेड़-छाड़ का बहुत सुन्दर चित्रण मिलता है। इसीलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि लोक गीत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह हमारी संस्कृति की अनूठी धरोहर है जो मानवीय जीवन के सभी पहलुओं को अपने साहित्य से छूता है। इन गीतों के माध्यम से हम हर जाति में, उपजाति में, हर मानव समुदाय में उनके पूर्वजों के संघर्ष और उनकी उपलब्धियों की गाथा से अवगत होते हैं। इन गीतों के साहित्य में इनका इतिहास है। जैसे आल्हा उदल, हीर रान्झा, जाहरवीर, नरसिंह भक्त आदि हैं। इस तरह की बहुत सारी गाथाएँ हैं जो हमें हमारे पूर्वजों से जोड़ती हैं। हमसे हमारी पहचान करवाती हैं।

लोक साहित्य जनता की गोद में पलकर ही बड़ा होता है। यह जनता की सरलता, स्वाभाविकता और स्वच्छंदता से विभूषित होकर जनता का ही मन मोह लेता है। इस साहित्य में युगों युगों की वाणी की साधना समाहित रहती है। जिसमें लोकमानस प्रतिबिंबित होता है। इसीलिए जिसके किसी भी शब्द में रचना चैतन्य नहीं मिलता, जिसके प्रत्येक स्वर, लय और लहजे में लोक का बिम्ब झलके वह लोक का अपना है और उके लिए अत्यंत स्वाभाविक है। लोक गीतों में रचा बसा साहित्य सिर्फ गाँव और शहरों में रहने वाले अल्पसंस्कृत, अशिक्षित जनता की भावनाओं का उदगार नहीं है अपितु लोक क्षेत्र विशेष का एक सम्पूर्ण समुदाय को अपने में समाहित किए हुए है। इसके अंतर्गत शिक्षित, अशिक्षित, साधारण-असाधारण सभी स्तर के लोगों का समावेश है। जन-मानस की भावनाएँ सामान होती हैं-आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जन्म-मरण, लाभ-हानि सुख-दुःख आदि की अभिव्यंजना जिस साहित्य में पाई जाती है वाही लोक साहित्य है और इससे समाज का कोई सा भी वर्ग अछूता नहीं है।

परन्तु आज का विकसित समाज अपनी इस संस्कृति से दूर होता जा रहा है। आज जीवन की व्यस्तता और विकास के वशीभूत होकर हम तीज-त्यौहार छोड़ते जा रहे हैं और साथ ही छूट रहे हैं हमारे गीत। उन गीतों में रच बसी हमारी परम्पराएँ, हमारे संस्कार। अपनी नींव को भुला कर हम उसे कमजोर कर रहे हैं। आज बहुत ज्यादा आवश्यकता है लोक गीतों के संरक्षण की। इसके साहित्य को संजोकर अपने संस्कारों को अक्षुण्ण बनाए रखने की। लोक गीत और उनमें निहित साहित्य ही असली भारत है। हमारी पहचान है। ये हमारा धर्म है कि हम अपनी परंपरा और अपनी संस्कृति के संरक्षण के लिए वचनबद्ध हो कर इसके पुनरुत्थान में अपनी भूमिका निभाएं। लोक गीतों के माध्यम से लोक साहित्य और लोक साहित्य के माध्यम से अपनी परम्पराओं को संजोएँ।

सन्दर्भ सूची:

<https://sunitasharmahpu.wordpress.com> > .

<https://artandculturalaffairshry.gov.in> >

[Janam Sanskar Aur Geet जन्म संस्कार और गीत](#)

[Bundeli Jhalak](#)

<https://bundeliijhalak.com> > janam...

<https://jogira.com/bhojpuri-sanskar-geet/>

Kumar, Sanjay. "An Area of Darkness by V. S. Naipaul: A Post-Colonial Exploration." *Educational Administration: Theory and Practice*, vol. 30, no. 4, 2024, pp. 10461–10465.

<https://doi.org/10.53555/kuey.v30i4.7314>.

